SEMESTER – II

CC – 6

HISTORY OF EUROPE AND MODERN WORLD (1919 - 2000)

<u>Unit – III : Topic</u>

Russian Revolution of 1917

Or, Volshevik Revolution

Vetted by :

प्रो॰ (डॉ॰) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ॰ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9430934482

20वीं सदी के इतिहास को प्रभावित करने वाली शक्तियों में 1917 के रूस की बोल्शेविक क्रांति का महत्व प्रथम विश्व युद्ध के महत्व से कम नहीं माना जा सकता । पिछले कई वर्षों से क्रांतिकारियों के एक प्रतिबद्ध और समर्पित गुट द्वारा इस क्रांति की तैयारी की जा रही थी और नवंबर, 1917 में सत्ता अधिग्रहण करके लेनिन ने इस क्रांति को संपन्न कर दिया । फ्रांस की राज्यक्रांति ने संसार को लोकतंत्रवाद, राष्ट्रीयता और राजनीतिक समानता का संदेश दिया । रूस की क्रांति ने न केवल राजनीतिक क्षेत्र में बल्कि आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में भी समानता स्थापित करने का प्रयत्न किया। पूरी दुनिया को इस क्रांति से समाजवाद का और नयी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना का अवसर मिला । साम्यवाद; नये समाज, नयी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतीक बन गया ।

मार्च, 1917 में रूसी क्रांति का विस्फोट हुआ । प्राय: सभी क्रांतियों की तरह इस क्रांति के भी मौलिक और तत्कालिक दोनों कारण थे । तमाम कारणों में आर्थिक और राजनीतिक कारण प्रमुख थे। क्रांति के पूर्व लगभग रूस की दशा वैसी ही थी, जैसी 1789 के पहले फ्रांस की थी । पूरे यूरोप में राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन हो रहे थे, पर रूस में जार की तानाशाही थी । 1917 ई० तक जार निकोलस द्वितीय की निरंकुशता अपनी चरम सीमा पर थी । सैकड़ों वर्षों से रूस की जनता अत्याचारी शासक का बोझ ढ़ो रही थी । वस्तुत: सम्राट की स्वेच्छाचारी शासन के विरूद्ध जो क्रांति हुई, उसे ही मार्च क्रांति कहा जाता है । जार निरंकुश शासन का पक्षपाती था । समाज का प्रत्येक वर्ग जार की निरंकुशता से परेशान था । समाज वर्गों में विभाजित था । कुलीन वर्ग को काफी शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त थी । निम्न वर्ग की दशा अत्यंत ही दयनीय हो चली थी । मजदूरों की दशा जितनी खराब रूस में थी, वैसी यूरोप के किसी भी राष्ट्र में नहीं थी ।

किसानों और अर्द्धदासों का वर्ग निम्न कहा जाता था । रूस की जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा कुलीनों के हाथ में था । सर्वसाधारण वर्ग के साथ कुलीनों का बर्ताव बहुत ही खराब हो चला था । निरीह जनता पर ये लोग जुल्म करते थे । जिस जमीन पर वे रहते थे, अगर उसकी बिक्री होती थी, तो उनकी भी साथ में बिक्री हो जाती थी । रूस में गरीबी और असंतोष बढ़ता जा रहा था । कहा जाता है, कि रूस में 1917 की क्रांति के पहले 150 वर्षों में रूसियों ने निरंकुश जारशाही और कुलीनों को दमन कर प्रतिरोध कर रहे थे, ऐसा उदाहरण पश्चिमी यूरोप के किसी भी देश में नहीं मिलता । बेरोजगारी की समस्या और भी जटिल हो गई थी । लाखों लोग शहरों में बेकाम हो गए थे । उनकी

आजीविका का कोई साधन नहीं था । इस तरह बढ़ते हुए असंतोष का समाधान क्रांति से ही हो सकता था ।

रूस में खेती प्रणाली और भूमि का वितरण भी दोषपूर्ण था । किसानों और मजदूरों की आबादी अधिक थी, पर उनके पास जमीन बहुत कम था । इसके विपरीत कुलीनों की संख्या कम होते हुए भी उनके पास रूस की आधे से अधिक जमीन थी । जमीन प्राप्त करने की किसानों की इच्छा क्रांति का प्रबल सामाजिक कारण बना ।

इंगलैंड और फ्रांस की तरह रूस का मध्यम वर्ग शक्तिशाली और निपुण नहीं था । 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रूस में मध्यम वर्ग का उदय हुआ । औद्योगिकरण के बाद मजदूरों की संख्या कुछ बढ़ी, लेकिन मजदूरों के संगठन को जार हमेशा कुचल देता था । रूस में मजदूरों का कोई राजनीतिक संगठन नहीं था । मध्यम वर्ग में जार के विरूद्ध आंदोलन को चलाने की क्षमता नहीं थी । इसके साथ मध्यम वर्ग इतना सक्षम नहीं था, कि क्रांति का नेतृत्व करता ।

रूस में मजदूरों की दशा अत्यंत दयनीय थी । जनसंख्या, क्षेत्रफल और प्राकृतिक साधनों के अनुपात में रूस एक पिछड़ा देश था । उसे विदेशी पूँजी पर भरोसा था ओर विदेशी पूँजीपतियों को लाभ कमाना था । मजदूरी कम और कठोर काम, गंदा और संकीर्ण वातावरण मजदूरों के जीवन की विशेषताएँ थी । पर, रूस में पूँजीपतियों के पहले मजदूर ही संगठित हो गए । धनी और गरीबी के बीच बहुत ही खाई बढ़ गई थी । फलतः रूस के मजदूरों में असंतोष महान् क्रांति का प्रमुख कारण माना जाता है । यह मजदूरों की क्रांति थी ।

रूस निरंकुश राजतंत्र का गढ़ था । पर, अन्य देशों में काफी सुधार हो चुका था । रूसी राजतंत्र स्वेच्छाचारी था । प्रेस की स्वतंत्रता और भाषण की स्वतंत्रता नहीं थी । रूस का शासक राज्य और चर्च का सर्वशक्तिमान पदाधिकारी था । फलतः शासक और जवाबदेह था । सम्राट दैवी अधिकारों में विश्वास रखता था । जार को कुलीन वर्ग और राज्य के पदाधिकारियों का समर्थन था । विशाल रूसी साम्राज्य की शेष आबादी उसके विरूद्ध थी । रूस की नौकरशाही भ्रष्ट और अकुशल थी ।

इनकी नियुक्ति योग्यता के आधार पर न होकर जार की कृपा पर होती थी । जार की गृहनीति विवेकशून्य थी और दिश नीति प्रभावहीन । 1853 ई० में क्रीमिया युद्ध और बाद में 1904-05 में रूस-जापान युद्ध में रूस की पराजय हुई । इससे सारी दुनिया में रूस अपमानित हुआ ।

1789 फ्रांस की राज्य-क्रांति तथा इंगलैंड की औद्योगिक क्रांति का प्रभाव रूस पर पड़ा । रूस में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रवेश हुआ । जिन विचारकों ने क्रांति में योगदान दिया, उनमें कई विचारकों को जार ने तंग करवाया । टाल्सटॉय को भी सजा मिली । मैक्सिम गोर्की को जार ने "Academy of Science" से हटा दिया । रूस में वेलेंसकी और हर्जन ने अपने विचारों से लोगों को प्रभावित किया । इससे वैचारिक क्रांति का सूत्रपात हुआ और जार के शासन का उपहास हुआ । प्लेखनाव पहला समाजवादी था, जिसने जार की निरंकुशता खत्म करने और साम्यवाद की स्थापना करने की बात उठाई । प्रतिक्रियावादी शासन की समाप्ति के लिए वातावरण तैयार होने लगा । टाल्सटॉय, तुर्गनेव और जे स्टीविस्की के क्रांतिकारी उपन्यासों का रूसी जनता पर क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा ।

रूस में 1917 की क्रांति अचानक नहीं हुई थी । 19वीं सदी के मध्य में ही सर्वसाधारण में विद्रोह के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे । रूस में जार की सेना विशाल थी, पर उसकी दशा बहुत ही खराब हो गयी थी । जार निकोलस द्वितीय का दुर्बल चरित्र भी उसे क्रांति का उत्तरदायी बना दिया । उस पर उसकी पत्नी जारीना का प्रभाव था, जो प्रतिक्रियावादी एवं संकीर्ण विचार की महिला थी । वह जर्मन थी और रूसी प्रजा की जो कठिनाईयाँ थी, उसे उसकी कुछ भी चिंता नहीं थी ।

प्रथम क्रांति (1905) : रूस की पराजय जापान से हुई । उससे रूस की जनता अपमानित हुई और क्रांति के लिए तत्पर हो गई । पूरे देश में विद्रोह हो गया । निकोलस ने क्रांतिकारियों को कुचलने का अथक प्रयास किया । 1905 में जार ने उन मजदूरों पर गोली चलवायी, जो अपनी याचिका लेकर राजमहल पहुँचे थे । बहुत अधिक मजदूर मारे गये । इसका प्रभाव पूरे देश पर पड़ा । इस क्रांति के क्रम में एक संगठन की आवश्यकता पड़ी और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए

किसानों की सोवियतों का निर्माण हुआ । जार ने भाषण और प्रेस की स्वतंत्रता मान ली । राष्ट्रीय सभा (ड्यूमा) को कानून बनाने का अधिकार मिला ।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी ने रूस को कई स्थानों पर पराजित किया । युद्ध में लगे रहने से रूस की आर्थिक स्थिति और अधिक खराब हो गई । अकाल की स्थिति में 7 मार्च, 1917 को रूस के मजदूरों ने 'पेट्रोग्राड' की सड़कों पर प्रदर्शन किया । जारशाही के अंत के लिए ये लोग तत्पर थे। जार की फौज ने मजदूरों के प्रदर्शन पर गोली नहीं चलायी । चारों ओर हड़तालें होने लगी । रूस में 7 नवंबर, 1917 की दो बजे रात को बोल्शेविकों ने पेट्रोग्राड की रेलवे, सड़कों, कोतवाली, खजानों, डाकघरों, बैंकों और सरकारी इमारतों पर कब्जा कर लिया ।

बोल्शेविक क्रांति का नेतृत्व लेनिन कर रहा था । उसके नेतृत्व में ही यह दल संगठित हुआ । वह अदम्य साहस और लगन के साथ समस्याओं के समाधान में लगा हुआ था । वास्तव में ऐसा उदाहरण कम मिलेगा, जब कठिनाईयों में रहकर किसी व्यक्ति को इतनी सफलता मिली हो जितनी लेनिन को । वह जमीन हस्तांतरित करके सारी सत्ता सोवियतों को सौंपना चाहता था । लेनिन के नेतृत्व में साम्यवादी सरकार ने रूप में एक नया प्रयोग किया, जिसके द्वारा रूस में वर्गहीन समाज का निर्माण किया गया । मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को पूर्णतया अंत कर दिया गया । अपने व्यक्तित्व को प्रभाव से उसने जर्मनी के साथ 'ब्रेस्ट-लिटोवस्क' (1918) की संधि करके युद्ध समाप्त कर दिया। बोल्शेविक पार्टी ने शंति, भूमि और रोटी की नारे को प्रमुखता दी । उसे रूसी जनता और सेना का समर्थन प्राप्त था । अलोकप्रियता के कारण 1917 ई० में जब करेंसी की सरकार का पतन होने लगा, तो बोल्शेविकों ने सत्ता पर अधिकार कर लिया । लेनिन उसका नेतृत्व कर रहा था और उसे पूरी सफलता भी मिली । रूस में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हुई ।

इस प्रकार बिना खून-खराबा के बोल्शेविकों ने हाथ में सत्ता आ गई । लेनिन की अध्यक्षता में उनकी सरकार बनी । रूस ने जिस सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया, उसमें पूंजीपति और मध्यम वर्ग के लिए कोई स्थान नहीं रहा । मजदूर ही अब राजनीतिक प्रश्नों के निर्णायक बने । इस क्रांति के चलते रूस से जार की निरंकुशता एवं निरंकुश शासन की समाप्ति हुई ।

अभिजात वर्ग और चर्च की शक्ति विनष्ट कर दिया गया । रूस में समाजवादी राज्य की स्थापना हुई। 1917 की रूसी क्रांति दुनिया की पहली सफल समाजवादी क्रांति थी, जिसके चलते उसका महत्व बढ़ गया । यदि फ्रांस की क्रांति ने अभिजातीय कुलीन वर्ग से सत्ता दिलाकर बुर्जुआ वर्ग के हाथ में सौंप दी, तो रूस की क्रांति ने कुलीन और बुर्जुआ दोनों वर्ग को समाप्त कर सत्ता मजदूरों, किसानों को सौंप दी और सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व समाप्त किया । लेनिन के नेतृत्व में साम्यवादी सरकार ने रूस में एक नया प्रयोग किया, जिसके बारे में अमेरिकी पत्रकार जॉन रीड (John Read) ने इसकी विस्तार से चर्चा की है, जिसका विवरण बड़ा ही सुंदर है ।

Note:– रूस में लेनिन और स्टालिन के कार्यों एवं उपलब्धियों की चर्चा अगले E-content में किया जाएगा ।

Suggested Readings :

1. E. H. Carr – International Relations between the Two world Wars – 1919, 1939.
2. Partha Sarthi Gupta – यूरोप का इतिहास, भाग–2
3. लाल बहादुर वर्मा – यूरोप का इतिहास, भाग–2
4. देवेंद्र सिंह चौहान – समकालीन यूरोप, भाग–2